JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रेमचन्द के गोदान में अभिव्यक्त यर्थाथ

डॉ॰ हरदीप कौर

'यथार्थ' शब्द को हम अपने दैनिक जीवन में अक्सर सुनते है जिसका शब्दकोष परक अर्थ है –

यथार्थ शब्द से ही यथार्थवाद बना है वाद का अभिप्राय एक जैसे विचारों का इकट्ठा होना।

अगर हम साहित्य की बात करे तो 'यथार्थवाद' शब्द हमने कहानी, कविता, उपन्यास, नाटक, आलोचना आदि सभी साहित्यों में विद्यायों में अकसर पढा और सुना है। ''साहित्य में यर्थाथ कई रंगों में अभिव्यक्त होता है। साहित्य की सभी विद्याएँ जीवन के किसी न किसी अनुभव को अभिव्यक्ति देती है, किन्तु सामाजिक जीवन जितना और जिस रूप में अन्यास के द्वारा अभिव्यक्ति होता है, साहित्य की किसी अन्य विद्या द्वारा नहीं। मानव जीवन की विविधता सर्वाधिक विशदता के साथ उपन्यास में ही अभिव्यक्ति होती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जैसे आलोचक भी उपन्यास की इस शक्ति को स्वीकार करते है, ''वर्त्तमान जगत में उपन्यासों की बड़ी शक्ति है। समाज जो रूप पकड़ रहा है उसके भिन्न–भिन्न वर्गों में जो प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हो रही है, उपन्यास उनका विस्तृत प्रत्यक्षीकरण ही नहीं करते, आवश्यकतानुसार उनके ठीक विन्यास, सुधार अथवाध निराकरण की प्रवृत्ति भी उत्पन्न कर सकते है।''[1]

'गोदान' के यथा पर विचार करने के पूर्ण स्वयं प्रेमचन्द के मत को जान लेना आवश्यक है ''प्रेमचन्द ने यह मान्यता प्रस्तुत की थी कि उपन्यासकी दो कडियाँ होती है – आदर्शवादी और यथार्थवादी, औश्र इसी क्रम में विस्तार से इनकी व्याख्या करते हुए और इनमें बीच सामंजस्य की कल्पना करते हुए 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' की उन्होंने एक नयी श्रेणी विकसित की थी। आगे उन्होंने लिखा है कि ''वही उपन्यास उच्च कोटी के समसे जाते हैं, जहाँ यथार्थ और आदर्श का समावेश हो उसे आप आदर्शोन्मुख यथार्थवाद कह सकते है।''[2] किन्तु ध्यान से देखा जाये तो गोदान तक आते–आते प्रेमचन्द की लेखनी ने आदर्शवाद को छोड़कर एक दम यथार्थवादी क्रांतिकारी का रूप ग्रहण कर लिया था। 'गोदान में प्रेमचन्द की दृष्टि वस्तुवादी रही

है। यही कारण है िकवे उन पात्रों की विसंतियों को भी निर्ममतापूर्वक बेपर्द करते चलते हैं, जिनके प्रति उनका लगाव है। पात्रों के चरित्र की विसंगतियों, मानवीय कमजोरियाँ और परिस्थिति गत विवशताएँ उन्हें अधिक मानवीय तो बनाती ही है साथ ही पाठकों से आत्मीय लगाव भी पैदा करती हैं, उन्हें ढेर सारी पाठकीय संवेदनाएँ प्राप्त होती हैं। गोदान के पूर्व के उपन्यासों में आदर्श के प्रति जो आसक्ति थी वह टूट गयी लगती है। अदार्श का मोहभंग और यथार्थ से लागव ही कारण है कि प्रेमचन्द 'गोदान' में कोई समाधान नही लादते और न किसी समाधान की और सूक्ष्म संकेत ही करते हैं।[3] 'गोदान' उपन्यास और 'कफन' संग्रह की कहानियों में वे आदर्शवाद को छोड़कर एक दम क्रांतिकारी बन गए हैं। इसका कारण यह था िकवे जिस उद्देश्य को लेकर चले थे, इस समझौते द्वारा वह पूरा तो क्या होना था, बल्कि उन्होंने देखा कि उनका मार्ग अवरूद्ध हो गया। उन्हें जीवन में जिन कठोर परिस्थितियों से जूझना पड़ा था, उन्होंने उन्हें क्रांतिकारी न सही पर स्वभावतः प्रगतिशील बना दिया था। उन्होंने प्रगतिशील लेखक संघ के समापति पद से जो भाषण दिया था, उसमें कहा हैः– ''साहित्यकार या कलाकार स्वभावतः– प्रगतिशील होता है, अगर यह उसका स्वभाव न होता, तो शायद वह साहित्यकार ही न होता।''[4] ''प्रेमचन्द जो यथार्थ निष्प्राण यथार्थ नहीं बल्कि जीवन यथार्थ हैं जिसके अन्दर उद्भव, विकास एवं नूतन सृष्टि की सशक्त प्रेरणा है।''[5]

इसमें लेखन ने एक कृषक होरी को केन्द्र बिन्दु बनाया है। पूरी कहानी होरी के इर्द गिर्द घूमती है। होरी मध्यवर्गीय कृषकों का प्रतिनिधित्व करता है। होरी का जीवन प्रारम्भ से अन्त तक सतत् संघर्ष में बीतता है। वह एक समस्या को सुलझा नहीं पात कि दूसरी उपस्थित हो जाती है। वंश मर्यादा की रक्षा में वह दिनों दिन महाजन के चंगुल में फँसता जाता है और एक दिन ऐसा आता है कि घर–बार, हल–खेत सब कुछ विलुप्त हो जाता है। होरी महतों से मजदूर हो जाता है। चितां–जर्जर शरीर साथ नहीं देता है। उसकी जीवन लीला समाप्त हो जाती है। पत्नी मूर्च्छित हो जाती है किन्तु पण्डित दाता दीन गोदान करने के लिए खड़े रहते है। यही भारतीय है भारतीय समाज का वास्तवित चित्र है। ''प्रेमचन्द को अपने समय के यथार्थ की गहरी पहचान थी अर्थात् उनकी चेतना को यथार्थ चेतना का एक बहुत सतही आयाम है घटनाओं, प्रसंगों, दृश्यों, व्यापारों और वेशभूषा, खान–पान आदि की यथातथ्य पहचान। इससें महरा आयाम है अनेक वर्गों, परिवारों, व्यक्तियों आदि के पारस्परिक सम्बन्धों और संवेदनाओं के तनाव की पहचान। इससे भी गहरा आयाम है उस केन्द्र बिन्दु की पहचान जो इन समस्त सम्बन्धों, संवेदनाओं और मूल्यों के बदलाव का कारण बन रहा है और जिसके कारण बाहर बहुत कुछ घटित हो रहा है।''[6]

प्रेमचन्द ने 'गोदान' में भारतीय समाज व्यवस्था का, कृषक जीवन की समस्याओं का, रूढिवादिता, अंधविश्वास, निर्धनता, वैमनरूप, आपसी फूट, अशिक्षा आदि का यर्थाथवादी चित्रण किया है। साथ ही, ग्राम परिवेश के समग्र रूप को बहुत संश्लिष्ट ढंग से गोदान में उभारा है। 'गोदान' में इन्होंने केन्द्र में रखा गाँव के अभाव ग्रस्त किसान को। इसलिए इस उपन्यास में 'गाँव' का समूचा बाहरी और भीतरी परिवेश मूर्त्त हो उठा। बाहरी परिवेश में प्रकृति है, गाँव का बाहरी स्वरूप है, और भीतरी परिवेश में गाँव के व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बन्ध, वर्गो के सम्बन्ध अभाव और उल्लास की संवेदनाएँ, संघर्ष की अटूट प्रक्रिया, रिस–रिसकर टूटते हुए

मूल्य तथा पर्त दर पर्त उभरती यातनाएँ है, भारतीय किसान की जीविका खेती है। इस खेती जीवी किसान को चारों ओर से शोषण शक्तियाँ घेरे हुए है।''[7]

इस उपन्यास में किसी प्रकार के आदर्शवादी समाधान की चेष्टा नहीं है, जो उनके पूर्ववर्ती उपन्यासों में है। इस उपन्यास में भारतीय जीवन की समाचारों का यथार्थवादी चित्रण तो है किन्तु आदर्शवादी रूप में उसका उस समस्या का समाधान नहीं है। ''यथार्थवादी उपन्यास में समस्या तो उठायी जाती है किन्तु समाधान नहीं प्रस्तुत किया जाता है।''[8] गोदान में प्रेमचन्द्र ने सामन्ती और महाजनी व्यवस्था के क्रूर यर्थाथ की पहचान करवाई है। समाज की परिवर्त्तन का भी शक्तियाँ भी इस बदलाव के लिए बेचैनी अनुभव कर रही थी। ऋण किसानों की एक ऐसी समस्या है जिसमें वे दिनों दिन पिसते जा रहे है। इसलिए प्रेमचन्द किसानों में जागरण और विद्रोह के भाव भरते है। गोदान के एक पात्र रामसेवक की ये बातें इसका प्रमाण है – संसार में गऊ बनने से काम नहीं चलता। जितना दबो उतना ही लोग दबाते हैं।..... चारों तरफ लूट है। ..... यहाँ तो जो एक किसान है, वह सबका नरम चारा है।..... कभी जमींदार ने गाँव पर हल पीछे दो–दो रूपये चन्दा लगया। किसी बड़े अफसर की दावत की थी। किसानों ने इंकार कर दिया। बस उसने सारे गाँव पर जाफा कर दिया।..... मैंने गाँव भर में डोंटी दिखा दी कि कोई लगान न वो और न खेत छोडों।..... गाँव वालों ने मेरी बात मान ली और सबने जाफा देने से इंकान कर दिया। जमींदार ने देखा सारा गाँव एक हो गया है तो लाचार हो गया। खेत बेदखल कर दे तो जोते कौन।'' यह प्रेमचन्द के याथार्थवादी सोच का परिणाम है जिसके तहत वे यथार्थवादी समाधान की बेचैनी जीते हैं, किसानों में अपने अधिकारों के लिए लड़ने की चेतना जगाते है। यह प्रेमचन्द्र के कयाकार कर सर्वथा नया रूप है।''[9]

अतः गोदान में प्रेमचन्द का मानवतावाद सही अर्थों में प्रकट हुआ है। इसमें यह आदर्शवाद में हल ढूँढना छोड़कर यथार्थवाद का नग्न चित्रण करने लगे। ऐसा नग्न चित्रण जो व्यक्ति मानस को हृदय को अंदर तक हिला देता है। जीवन की इतनी सार्थक आलोचना प्रेमचन्द जैसा साहित्यकार ही कर सकता है। आज भी हमारे देश में किसानों की जो दुर्दशा (हीन–दशा) दिखाई देती है, गोदान का होरी उन समस्त किसानों का प्रतिनिधित्व करता है। आज भी हमारे देश में असमानता का मुख्यः कारण ईर्ष्या, जोर जबरदस्ती, बेईमानी, झूठ, मिथ्या, अभियोग, आरोप, वेश्यावृत्ति, व्यभिचार, भ्रष्टाचार, बलात्कार, चोरी–डकैती, झूठ–फरेब का बोलबाला है, प्रेमचन्द इन सभी मानवीय मूल्यों के पतन के आधारभूत स्त्रोत को पहचानते थे।

संदर्भ–ग्रंथ सूची

1. गोदान का महत्त्व – सम्पादक – डॉ॰ सत्यप्रकाश मिश्र, पृष्ठ 174
2. प्रेमचन्द हमारे समकालीन – प्रधान सम्पादक – डॉ॰ पाण्डेय शशिभूषण, पृष्ठ 178
3. गोदान का महत्त्व – सं॰ डॉ॰ सत्यप्रकाश मिश्र, पृष्ठ 178
4. प्रेमचन्द हमारे समकालीन – प्रधान स॰ डॉ॰ पाण्डेय शशिभूषण, पृष्ठ 263
5. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद – डॉ॰ त्रिभुवन सिंह, पृष्ठ 185–186
6. समकालीन जीवन संदर्भ और प्रेमचन्द – स॰ धर्मेन्द्र गुप्त, पृष्ठ 68
7. समकालीन जीवन संदर्भ और प्रेमचन्द – स॰ धर्मेन्द्र गुप्त, पृष्ठ 66,67
8. प्रसाद के उपन्यास और यथार्थवाद – डॉ॰ अर्चना सिंह, पृष्ठ 81
9. गोदान का महत्त्व – स॰ सत्यप्रकाश मिश्र, पृष्ठ 182

डॉ॰ हरदीप कौर
WZ–9 गली नं॰ 3, हिन्द नगर,
तिलक नगर, नई दिल्ली–110018
फोन नं॰ 9811137112
E-mail: hardeepnavya@gmail.com